एकलव्य का प्रकाशन

छुटकी गिलहरी

विनय दुबे की एक लम्बी कविता

छुटकी गिलहरी

चित्रों भरी
एक लम्बी कविता

लेखक
विनय दुबे

चित्र
विवेक

एकलव्य
का प्रकाशन

छुटकी गिलहरी

चकमक में प्रकाशित विनय दुबे की एक लम्बी कविता
चित्रांकन तथा आवरण : विवेक

प्रथम संस्करण : नवम्बर, 1999
मूल्य : 12.00 रुपए मात्र

प्रकाशक : एकलव्य
ई - 1/25, अरेरा कालोनी,
भोपाल - 462 016
म.प्र.

यह पुस्तिका मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत शासन
एवं सर रतन टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से प्रकाशित

ISBN 81-87171-27-8

राजकमल ऑफसेट प्रिंटर्स, भोपाल द्वारा मुद्रित 5000 प्रतियाँ

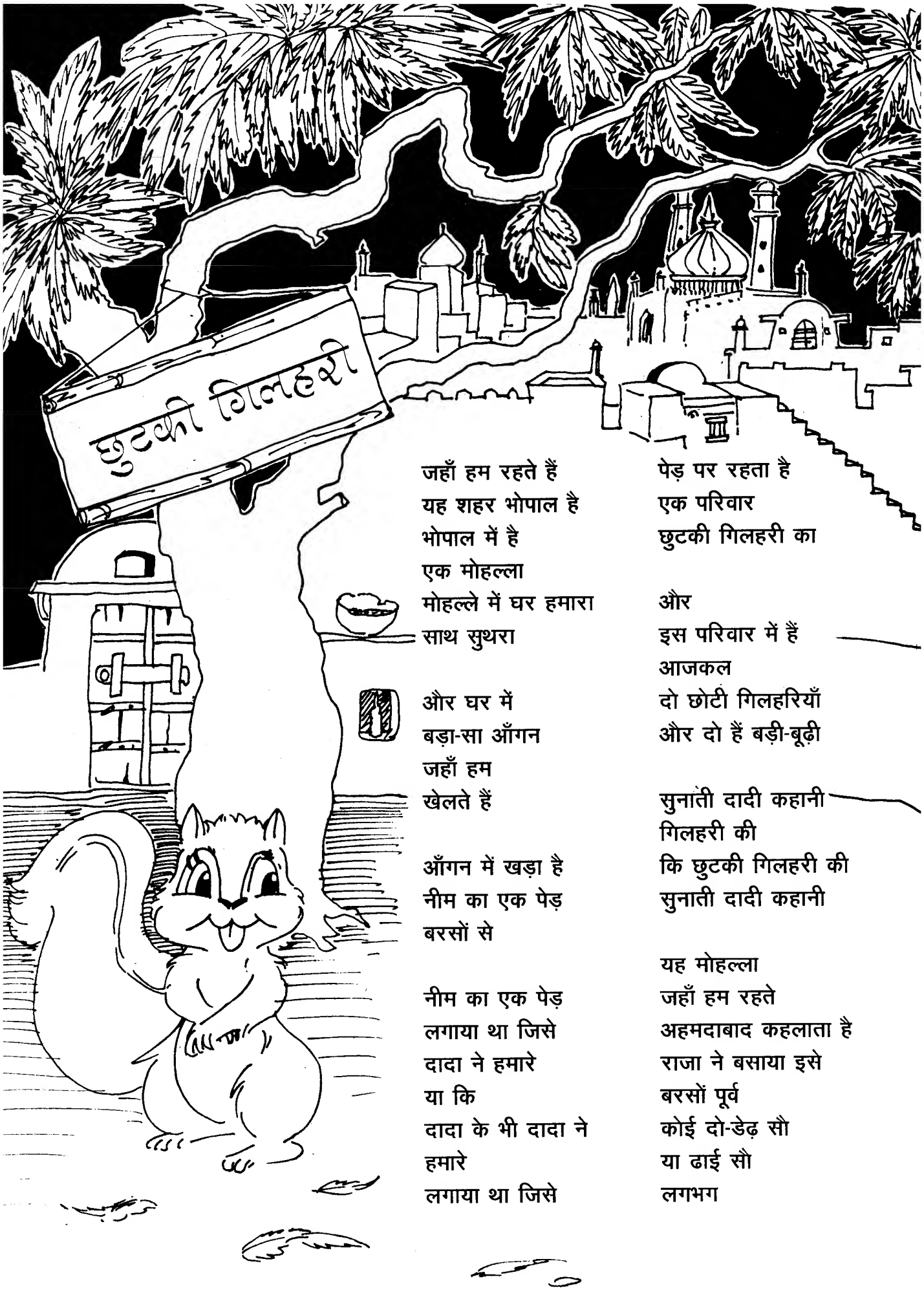

जहाँ हम रहते हैं
यह शहर भोपाल है
भोपाल में है
एक मोहल्ला
मोहल्ले में घर हमारा
साथ सुथरा

और घर में
बड़ा-सा आँगन
जहाँ हम
खेलते हैं

आँगन में खड़ा है
नीम का एक पेड़
बरसों से

नीम का एक पेड़
लगाया था जिसे
दादा ने हमारे
या कि
दादा के भी दादा ने
हमारे
लगाया था जिसे

पेड़ पर रहता है
एक परिवार
छुटकी गिलहरी का

और
इस परिवार में हैं
आजकल
दो छोटी गिलहरियाँ
और दो हैं बड़ी-बूढ़ी

सुनाती दादी कहानी
गिलहरी की
कि छुटकी गिलहरी की
सुनाती दादी कहानी

यह मोहल्ला
जहाँ हम रहते
अहमदाबाद कहलाता है
राजा ने बसाया इसे
बरसों पूर्व
कोई दो-डेढ़ सौ
या ढाई सौ
लगभग

बड़े तालाब के
तट पर
बनाया यहाँ
नूरूस्सबा
राजा ने
महल अपना
या रनिवास
नूरूस्सबा जिसका नाम
राजा ने
यहाँ तालाब के तट पर

महल वह
अब भी खड़ा है
खंडहर की शक्ल में

नूरूस्सबा
कहता कहानी
आपबीती
और जगबीती

दादी सुनाती है
कहानी
महल की
महल के रास्तों में
आज भी हैं पेड़
दादी बताती है

महल के रास्तों में
देशी और विदेशी
पेड़
इमली आम के
और नीम के भी
पेड़
कई इनमें

यहीं
छुटकी का हुआ था जन्म
दादी बताती है
बरसों पूर्व

छोटी थी
तो बच्चे कहा करते थे
उसे छुटकी गिलहरी
बड़े-बूढ़े भी उसे
इस नाम से ही
जानते थे

यह कहानी
उसी छुटकी गिलहरी की है
जिसे दादी सुनाती है

चंचल बहुत थी
छुटकी गिलहरी
बचपने में

स्कूल जाती
सहेलियों के साथ
तेज़ थी पढ़ने में
पढ़ा करती लगा अपना मन

सुबह शाम
खेलते कूदते
बीच रस्ते में
कभी तो बैठ जाती
और खुजाती कान

या फिर
कभी सुनकर कोई पदचाप
चढ़ जाती यहीं
इस नीम पर झट
सर्र से

मिल जाता कभी जब इसे
फल अमरूद का कोई
कहीं
कच्चा

सड़क पर बैठ
बीचों-बीच
नीचे पेड़ के
यह उसे यों खाती
कुतरती
कि बस

एक दिन
आई खबर
फैली खबर
जो सुनी छुटकी ने

कि निकलेगी सवारी
सुबह
राजा की सवारी
यहीं इस सड़क से
कल
सवारी निकलेगी राजा की

होने लगी तैयारियाँ
बंदनद्वार सजने लगे
छिड़का गया पानी
सड़क पर

दादी सुनाती है
कहानी छुटकी गिलहरी की
कि छुटकी गिलहरी
उत्सुक हुई
देखकर हलचल
उत्सुक हुई

राजा की सवारी
देखने के लिए
उत्सुक हुई छुटकी

जा बैठी
नहा धोके
सज
सँवरकर
वहीं एक
डाल पर
उस पेड़ की

नीम के
उस पेड़ की
एक डाल पर
जा बैठी
छुटकी गिलहरी
लिए अमरूद का फल
एक कच्चा

दोपहर के ज़रा पहले
बाँधे हाथ
खड़े हो गए लोग

बाँधे हाथ
दोनों तरफ
उस लम्बी सड़क के
खड़े हो गए लोग

इधर थी छुटकी
गिलहरी
पेड़ पर
चुपचाप बैठी
देखने को
सवारी का दृश्य
बहुत आतुर

अब छुटकी
उधर

कच्चा अमरूद लिए
हाथ में
कुतरती जाती थी उसको
मौज में
बैठी डाल पर

छुटकी गिलहरी
डाल पर बैठी
कुतरती खाती कच्चा
अमरूद

गरदन उठाती छुटकी
अमरूद खाती
यों अज़ीमुश्शान से
कि बस
कि मत पूछो

दादी सुनाती है कहानी
निकली जब
राजा की सवारी
झुक गए सब लोग
बच्चे और बड़े-बूढ़े

उधर
ऊपर डाल पर बैठी
छुटकी गिलहरी
भूल बैठी थी स्वयं को
देखकर के दृश्य
राजा की सवारी का
अद्‌भुत
विशाल

दृश्य
राजा की सवारी का

सवारी में
हाथी-ऊँट थे
घोड़े थे

सैनिक थे
हाथों में
नंगी तलवारें लिए

दादी सुनाती है
कहानी
बीच में राजा था सबके
बैठा एक हाथी पर

दादी बताती है

पेड़ के नीचे
आई सवारी
आया फिर राजा

छुटकी तो
देखती रह गई बस
फटी-फटी आँखों से
भौंचक्की
हुई छुटकी
राजा को देखकर

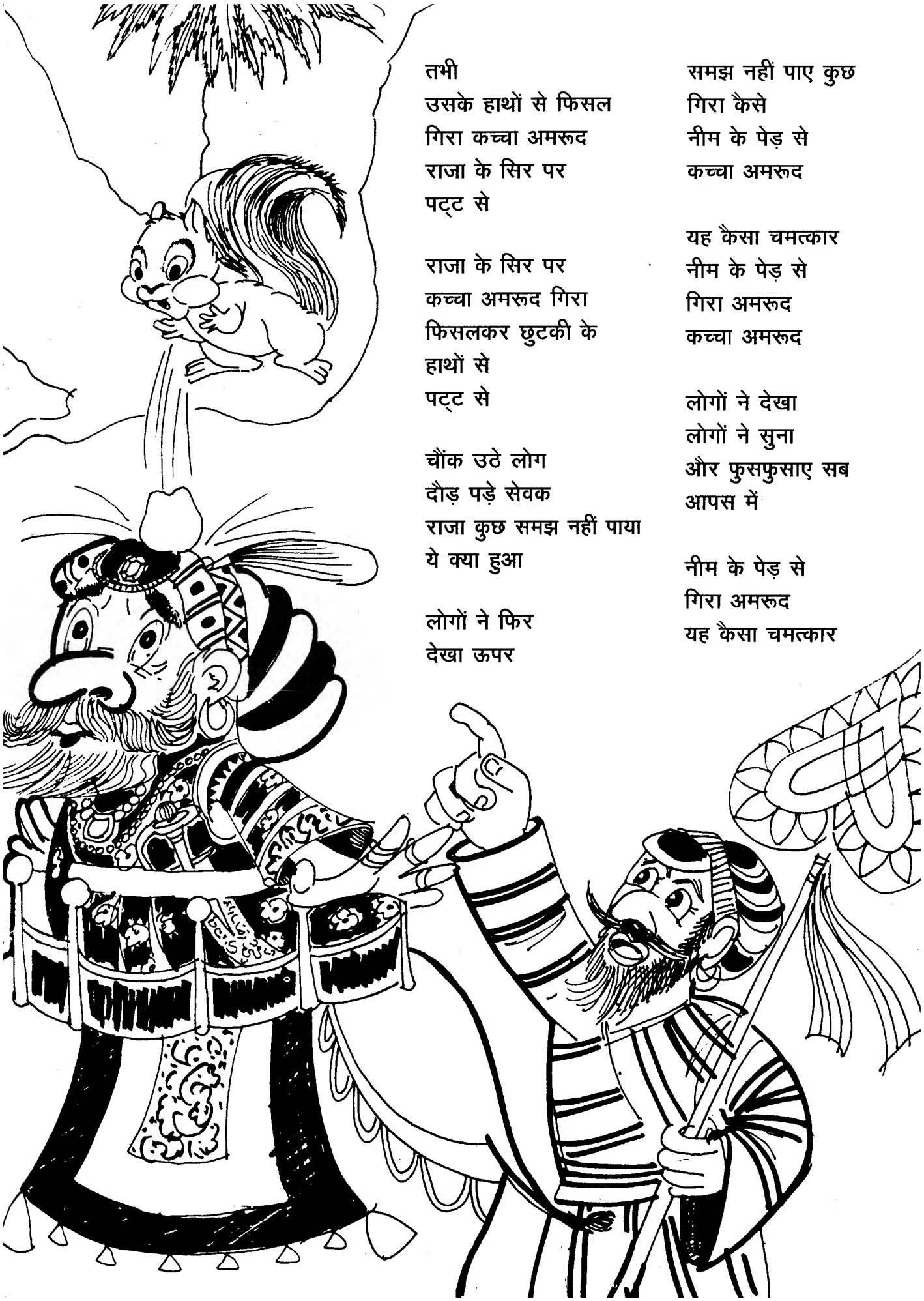

तभी
उसके हाथों से फिसल
गिरा कच्चा अमरूद
राजा के सिर पर
पट्ट से

राजा के सिर पर
कच्चा अमरूद गिरा
फिसलकर छुटकी के
हाथों से
पट्ट से

चौंक उठे लोग
दौड़ पड़े सेवक
राजा कुछ समझ नहीं पाया
ये क्या हुआ

लोगों ने फिर
देखा ऊपर
समझ नहीं पाए कुछ
गिरा कैसे
नीम के पेड़ से
कच्चा अमरूद

यह कैसा चमत्कार
नीम के पेड़ से
गिरा अमरूद
कच्चा अमरूद

लोगों ने देखा
लोगों ने सुना
और फुसफुसाए सब
आपस में

नीम के पेड़ से
गिरा अमरूद
यह कैसा चमत्कार

एक ने
दूसरे से कहा
नीम के पेड़ से
गिरा अमरूद
यह कैसा चमत्कार

दूसरे ने तीसरे से कहा
नीम के पेड़ से
गिरा अमरूद
यह कैसा चमत्कार

ऊपर बैठी छुटकी ने सुना
नीम के पेड़ से
गिरा अमरूद
यह कैसा चमत्कार
और फिर खिलखिलाकर
हँस पड़ी छुटकी गिलहरी

दूर-दूर तक फैल गई
हँसी उसकी

राजा ने सुनी
हँसी छुटकी की

लोगों ने सुनी
हँसी छुटकी की

सेवकों ने सुनी
हँसी छुटकी की

राजा ने देखा ऊपर
सबने देखा ऊपर
सैनिकों ने खींच ली
फिर अपनी-अपनी
तलवार

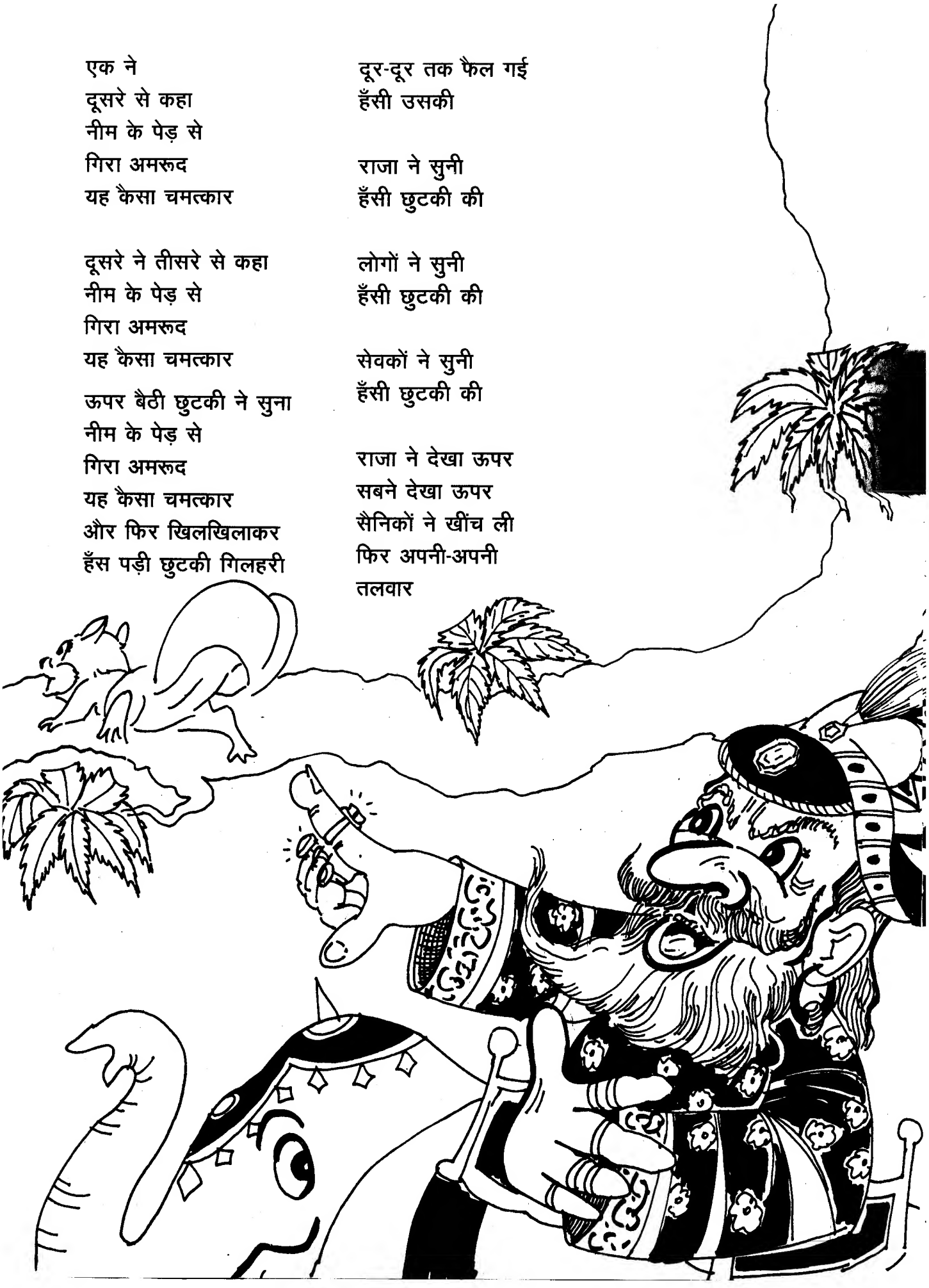

घबराकर भागी छुटकी
भागती छुटकी को
लोगों ने देख लिया

भागती छुटकी को
सेवकों ने देख लिया

भागती छुटकी को
राजा ने देख लिया

क्रोध से हो गई लाल-लाल
आँखें राजा की
राजा ने क्रोध में
दिया आदेश
लाओ पकड़कर
शैतान छुटकी गिलहरी को
हाज़िर करो दरबार में
इसे सज़ा देंगे हम

हाज़िर करो
छुटकी गिलहरी को
दरबार में कल
राजा ने दिया आदेश
इसे सज़ा देंगे हम

काट डालो
नीम का यह पेड़
छुटकी का बसेरा
काट डालो इसे
अभी इसी वक्त

मिटा डालो
छुटकी का घर
अभी इसी वक्त
राजा ने दिया आदेश

राजा का आदेश
सुना सबने

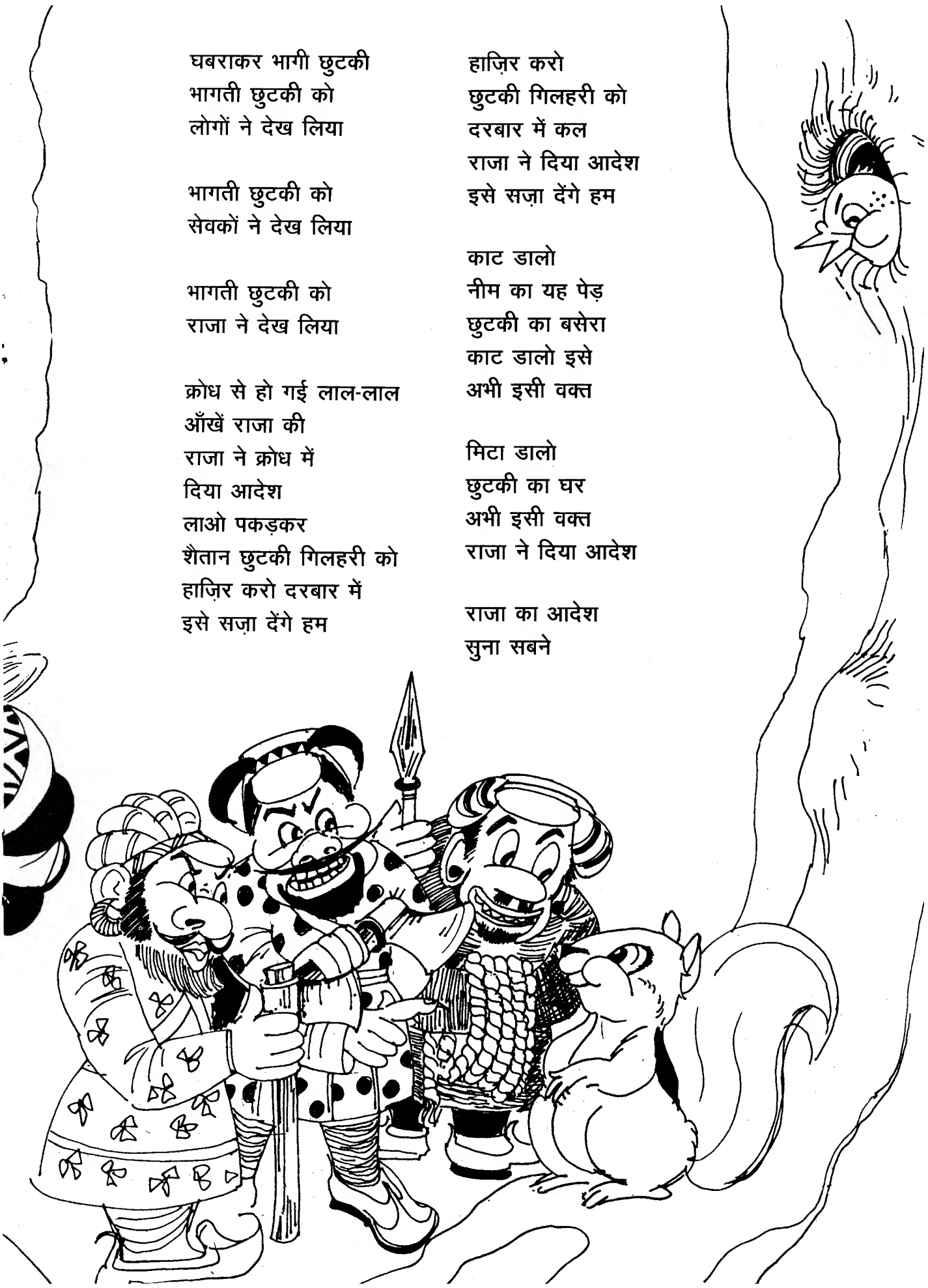

लोगों ने सुना
सेवकों ने सुना
छुटकी गिलहरी ने भी
सुना राजा का आदेश

सेवक ले आए कुल्हाड़ियाँ
लम्बे-लम्बे फालों वाली
बड़ी-बड़ी कुल्हाड़ियाँ

सेवक ले आए रस्से
बड़े-बड़े रस्से
मोटे-मोटे रस्से

फिर सबके सब
नीम के पेड़ को घेरकर
खड़े हो गए
सब के सब

दादी बताती है

छुटकी ने देखा सबको
सबकी कुल्हाड़ियों को
बड़ी-बड़ी कुल्हाड़ियों को
बड़े-बड़े रस्सों को

छुटकी गिलहरी ने
हाथी पर बैठे
राजा को देखा

सैनिकों को देखा
नंगी तलवारों को देखा

छुटकी ने सोचा कुछ
सोचकर उतर आई नीचे
नीम के पेड़ से
उतर आई
छुटकी गिलहरी

बिना घबराए
बिना डरे
साहस के साथ
छुटकी उतर आई
पेड़ से नीचे
उतर आई छुटकी
बिना डरे
बिना घबराए

बीच सड़क पर
लोगों के बीच
राजा के सामने

ठीक सामने राजा के
खड़ी हो गई आकर
जोड़कर हाथ
नवाकर माथ

फिर बोली छुटकी गिलहरी
राजा से

महाराज यह अंधेर है
अन्याय है ज़ोर जुलुम है

ग़लती यह मेरी थी
अनायास हुई जो मुझसे

अनजाने ही
हाथों से मेरे
फिसल पड़ा
कच्चा अमरूद

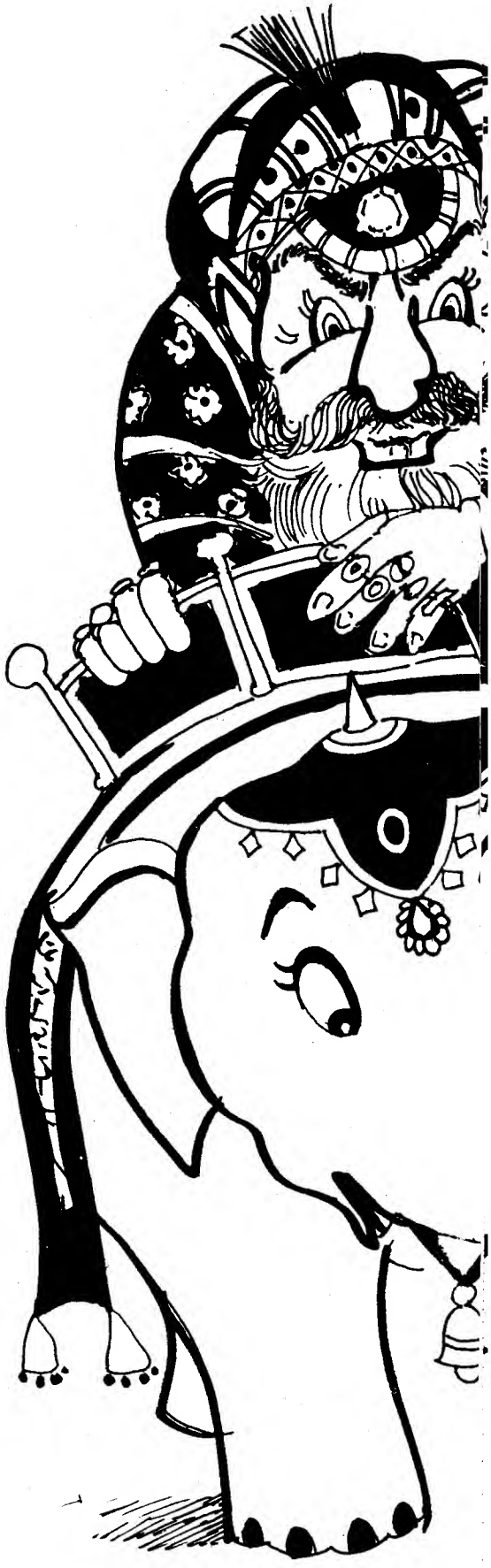

कहा छुटकी ने राजा से
सज़ा मुझको दें
हँसी मुझे आई

हँसने पर
सज़ा मुझको दें

कहा छुटकी ने राजा से
नीम के पेड़ को
क्यों सज़ा देते हैं
इसे क्यों कटवाते हैं
इसकी क्यों करते हैं हत्या

नीम का पेड़ तो
है निरपराध
जैसे सब पेड़
सबके सब निरपराध

लोगों को छाया देते हैं
पर्यावरण रखते हैं स्वच्छ
फल-फूल देते हैं

किनारे सड़क
के खड़े रहते हैं
ये जीवनदायी हैं

महाराज
सज़ा मुझको दें
हँसी मुझे आई

कहा छुटकी ने

हँसना अपराध है
आपके राज में
अगर हँसना अपराध है
तो
सज़ा मुझको दें
अपराधी मैं हूँ आपकी
मैं जीकर क्या करूँगी
आपके इस राज में
जहाँ हँसना अपराध है
हँसने पर पाबंदी है
इससे तो
मर जाना अच्छा है

आश्रय ही न रहेगा
मेरा जब
नीम का यह पेड़
तो मैं जीकर क्या
करूँगी

इससे तो
मर जाना अच्छा है
सज़ा मुझको दें

पेड़ तो निरपराध है यह
कहकर
खड़ी हो गई
छुटकी गिलहरी

चिपककर
नीम के पेड़ से
दौड़कर सर्र से

लोगों ने देखा
सेवकों ने देखा
राजा ने देखा
जिनके हाथों में
कुल्हाड़े थे

उनने भी देखा
जिनके हाथों में
रस्से थे
उनने भी देखा

छुटकी खड़ी थी
चिपककर
नीम के पेड़ से
अब क्या होगा
सोचा सबने

लोगों ने सोचा
अब क्या होगा

सेवकों ने सोचा
अब क्या होगा

सबके सब चकित
सबके सब भौंचक्के

क्या होगा क्या होगा
सोचा सबने

छुटकी गिलहरी ने
कहा था जो कुछ
सुनकर राजा ने
सोचा क्षण भर
फिर उठा राजा
और उतरा हाथी से
राजा नीचे उतरा

पैदल चलकर
आया वह
छुटकी गिलहरी के
पास
आया राजा

आकर के राजा ने
पास
छुटकी गिलहरी को
प्यार किया
पुचकारा

बोला फिर राजा
छुटकी तुम जीतीं
मैं हारा

मेरी आँखें
खोल दी तुमने
मैं तुम्हें करता हूँ प्रणाम

राजा ने कहा
छुटकी गिलहरी से

राजा ने कहा
लोगों से

राजा ने कहा
सेवकों से

अब नहीं कटेंगे पेड़
अब नहीं मरेंगे प्राणी
निरपराध

अब नहीं होगा
राज में मेरे
यह अनर्थ
कहा राजा ने

राजा ने फिर
दिया आदेश
सेवकों को

राजा ने फिर
दिया आदेश
सैनिकों को

न काटे पेड़
अब कोई कहीं पर
और रक्खे ध्यान

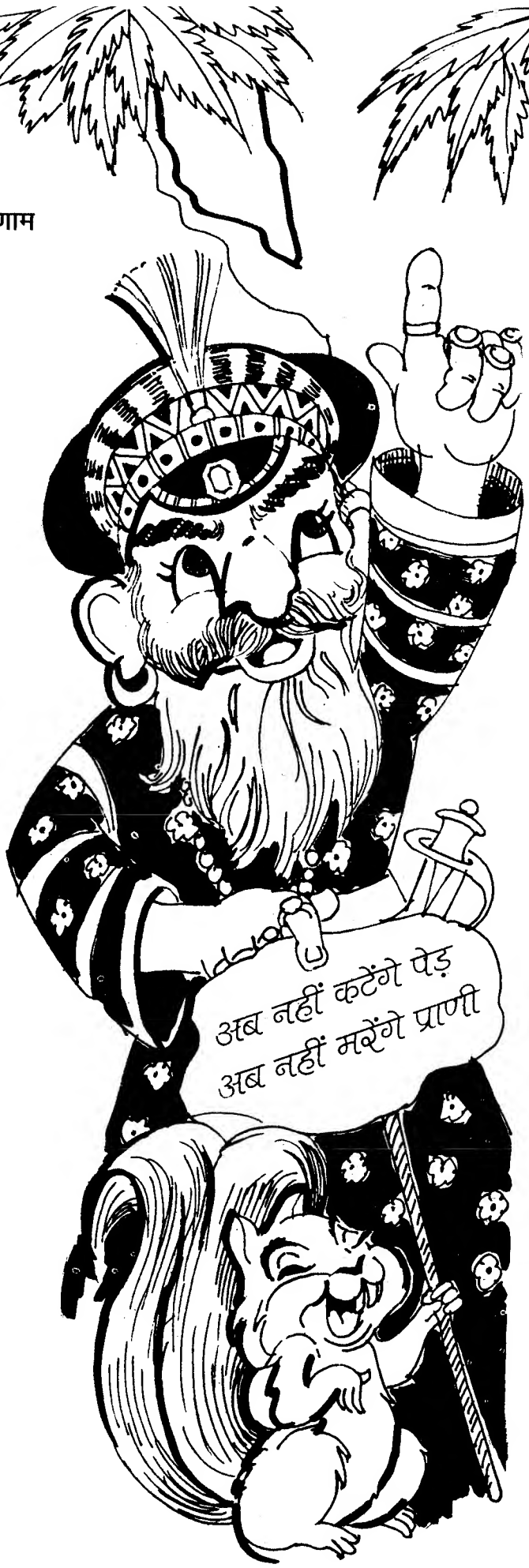

आगे से
सताए या कि
मारे नहीं कोई
प्राणियों को
मेरा आदेश है यह
प्राणियों और पेड़ों को
रहने दें
हँसते-खेलते आज़ाद

राजा ने दिया आदेश
दादी बताती है

तब से आज तक
सब पेड़ ज़िन्दा हैं
हरे भरे हैं
यहाँ अहमदाबाद में

और गिलहरियाँ ही
गिलहरियाँ हैं
यहाँ अहमदाबाद में

नीम के पेड़ ही पेड़ हैं
यहाँ अहमदाबाद में

हम जहाँ रहते हैं
दादी सुनाती है कहानी
दादी बताती है

कभी रहा करती थी
छुटकी गिलहरी
यहाँ अहमदाबाद में
इसी मोहल्ले में
हम जहाँ रहते हैं।

* *

एकलव्य : एक परिचय

एकलव्य, जो एक स्वैच्छिक संस्था है, पिछले कई वर्षों से शिक्षा एवं जनविज्ञान के क्षेत्र में कार्यरत है। एकलव्य की गतिविधियाँ स्कूल व स्कूल के बाहर दोनों क्षेत्रों में हैं। स्कूल शिक्षा में नए प्रयोगों का काम माध्यमिक कक्षाओं में होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से शुरू हुआ था और उनका विस्तार सामाजिक अध्ययन विषयों के साथ-साथ प्राथमिक कक्षाओं में भी हो गया है।

इस काम का मुख्य उद्देश्य है एक ऐसी शिक्षा जो बच्चे व उसके पर्यावरण से जुड़ी हो। जो खेल, गतिविधि व सृजनात्मक पहलुओं पर आधारित हो। इस काम के दौरान हमने पाया कि स्कूली प्रयास तभी सार्थक हो सकते हैं जब बच्चों को घर में या स्कूली समय से बाहर भी रचनात्मक गतिविधियों के साधन उपलब्ध हों, जिनमें किताबें तथा पत्रिकाएँ एक अहम हिस्सा हैं।

इसी मंशा से एकलव्य ने पिछले वर्षों में ग्रामीण इलाकों में बच्चों के लिए पुस्तकालय खोले हैं, चकमक क्लब बनाए हैं। स्थानीय स्तर पर बच्चों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली बाल पत्रिकाओं बालकलम, उड़ान आदि को प्रोत्साहित किया है।

जुलाई, 1985 से नियमित रूप से प्रकाशित चकमक पत्रिका भी इसी काम का एक हिस्सा है।

पिछले कुछ वर्षों में एकलव्य ने अपने काम का विस्तार प्रकाशन के क्षेत्र में भी किया है। *चकमक* के अतिरिक्त *स्रोत* (विज्ञान एवं टेकनोलॉजी फीचर) तथा *संदर्भ* (शैक्षिक पत्रिका) एकलव्य के नियमित प्रकाशन हैं। शिक्षा, जनविज्ञान, बच्चों के लिए सृजनात्मक गतिविधियों के अलावा विकास के व्यापक मुददों से जुड़ी किताबें, पुस्तिकाएँ, सामग्री आदि भी एकलव्य ने विकसित एवं प्रकाशित की हैं।

वर्तमान में एकलव्य म.प्र. में भोपाल के अतिरिक्त होशंगाबाद, हरदा, पिपरिया, देवास, उज्जैन व शाहपुर (बैतूल) में स्थित केन्द्रों तथा परासिया (छिंदवाड़ा) में स्थित उपकेन्द्र के माध्यम से कार्यरत है।

रचनाकार

छुटकी गिलहरी के रचनाकार श्री विनय दुबे हैं। वे मूलतः बड़ों की कविताओं के लिए जाने जाते हैं। उनके कविता संग्रह हैं - *महामहिम चुप हैं; सपनों में आता है राक्षस* और *खलल*। बच्चों के लिए लिखी उनकी अन्य कविताओं का एक संग्रह *'भों-भों म्याऊँ'* शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। *'नारायणपुर'* शीर्षक से एक काव्य नाटक भी प्रकाशित हुआ है। कविता के अलावा वे अनुवाद तथा समीक्षाएँ भी करते हैं।

वर्तमान में वे भोपाल के सेफिया कला, वाणिज्य एवं विधि स्नातकोत्तर महाविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक हैं।

सम्पर्क : कॉटेज नं. 3,
अहमदाबाद पैलेस रोड,
भोपाल, म.प्र.

चित्रकार

छुटकी गिलहरी का चित्रांकन श्री विवेक ने किया है। वे मध्यप्रदेश के जाने माने चित्रकार हैं। उन्हें चित्रकला के लिए राज्य और अखिल भारतीय स्तर के प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले हैं। उनके चित्रों की तीन एकल प्रदर्शनियाँ आयोजित हुई हैं। लगभग पन्द्रह विभिन्न प्रदर्शनियों में भी विवेक के चित्र शामिल रहे हैं।

विवेक चकमक के लिए नियमित रूप से चित्र बनाते रहे हैं।

सम्पर्क : जी 1/8, गुलमोहर कॉलोनी
ई-8, शाहपुरा, भोपाल म.प्र.